Remove Your Enemies By
Shatru Vidhvanshini Trishra Devi Mantra Prayoga

II शत्रु-विध्वंसिनी प्रयोग II

त्रिशरा देवी का प्रयोग शत्रुओं के नाश के लिए किया जाता है। भगवान शिव की ये शक्ति घोर रक्त अंगों वाली, तीन सिरों वाली, रौद्री, धूम्राक्षी, मेघों के समान रंग वाली तथा नीले अलंकारों से युक्त हैं। अपने हाथों में ये खडग, त्रिशूल, शूल, अभय मुद्रा (अपने भक्तों की रक्षा एवं उनकी निश्चिंतता के लिए) उत्तम एवं सुंदर अंगों वाली, त्रिजटा, भयंकर अग्नि युक्त हैं। ये नग्नावस्था में खुले बालों के साथ विहार करती हैं और अपने भक्तों को अभय दान देते हुए उनके शत्रुओं का विध्वंस करती हैं।

ऐसी भगवती त्रिशरा देवी के मंत्र को लिखने से पूर्व मैं उनके स्तोत्र का उल्लेख करूंगा जिसमें उनके बारह नामों का उल्लेख है। उनके इस स्तोत्र मात्र का पाठ करने से ही भक्त के समस्त संकटों का नाश हो जाता है और उसके शत्रु पराभव को प्राप्त होते हैं। भक्त को विजय की प्राप्ति होती है। यदि इस स्तोत्र का पाठ एक हजार की संख्या में मात्र तीन दिनों तक कर लिया जाये तो समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। यदि पाठ के साथ-साथ गुग्गुल, लाल चंदन तथा सरसों को घी के साथ मिलाकर हवन किया जाये तो वाद-विवाद और संग्राम में विजय की प्राप्ति होती है।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

प्रयोग विधि

सर्वप्रथम मंत्र का विनियोग करें। इसके लिए अपने दायें हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़ें :- ॐ अस्य श्री शत्रु विध्वंसिनी स्तोत्र मंत्रस्य, ज्वलत् पावकः ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, श्री शत्रु विध्वंसिनी देवता, मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त जल भूमि पर छोडकर ऋष्यादि न्यास करें-

ज्वलत् पावक ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
श्री शत्रु विध्वंसिनी देवतायै नमः हृदि।
श्री शत्रु विध्वंसिनी देवता प्रसादात् मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

तदोपरान्त कर-न्यास सम्पन्न करें -

ॐ शत्रु विध्वंसिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ रौद्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ त्रिशिरसे मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐरक्त लोचनायै अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ अग्निर्ज्वालायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

ॐ रौद्रमुख्यै करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

कर-न्यास पूर्ण करने के उपरान्त हृदयादिन्यास करें-

ॐ घोर दंष्ट्राय हृदयाय नमः ।

ॐ त्रिशूलिन्यै शिरसे स्वाहा ।

ॐ दिगम्बर्यै शिखायै वषट्।

ॐ मुक्त केश्यै कवचायै हुम् ।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

ॐ रक्तपाण्डयै नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ महोदर्यै अस्त्राय फट्।

फट् का उच्चारण करते हुए बायें हाथ की हथेली पर दायें हाथ की पहली दोनों उगंलियों से तीन बार ताली बजायें तथा 'ॐ रौद्रमुख्यै नमः' बोलते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन करें । दिग्बंधन से सुरक्षा की जाती है।

इसके बाद भगवती का ध्यान करें, यथा-

रक्तांगी शिववाहनां त्रिशिरसां रौद्री महाभैरवीम् ।
धूम्राक्षीं भव नाशिनीं घन निभां नीलालंकार कृताम्।।
खड्गं शूलं त्रिशूलं वराभययुतां ध्यात्वा कपालीं महा ।
सर्वांगी त्रिजटां महानलं निभां, ध्यायेत् पिनाकीं च ताम्।।

ध्यान करने के उपरान्त भगवती त्रिशरा के स्तोत्र का पाठ करें-

ॐ शत्रु विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा रक्तलोचना ।
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी, घोर दष्ट्रां त्रिशूलिनी ।।
दिगम्बरी मुक्तकेशी श्वेत पाणिर्महोदरी ।
सर्वदा विप्लवे घोरे, शीघ्रं वश्यकरी द्विषाम् ।।

अब मंत्र जप करने से पूर्व उसका शापोद्धार करें । इसके लिए निम्नलिखित मंत्र की एक माला जप करें-

शापोद्धार मंत्रः- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्रों ऐं लोभाय मोहाय उत्कीलाय स्वाहा।

इसके बाद शत्रुविध्वंसिनी मंत्र की दस माला जप करें -

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAKNATH)

शत्रुविध्वंसिनी मंत्रः- ॐ नमो भगवति चामुण्डे रक्त वाससे अप्रतिहत रूप पराक्रमे ! अमुकं वधाय विचेतसे स्वाहा ।(अमुकं के स्थान पर शत्रु का नाम लें)

इस मंत्र का तीन दिन तक एक हजार मंत्र जप करने का विधान है। इसके साथ-साथ मंत्र जप से पूर्व अथवा मंत्र जप के उपरान्त उपरोक्त बारह नाम वाले स्तोत्र का भी प्रत्येक दिन एक हजार की संख्या में पाठ किया जाना चाहिए। जब तीन दिनों तक नित्य प्रति एक हजार की संख्या में मंत्र जप एवं एक हजार की संख्या में स्तोत्र पाठ पूर्ण हो जाये तो उसके उपरान्त नीचे लिखे अग्नि मंत्र से एक हजार की संख्या में साधक को आहुतियां देनी चाहिए । अग्नि मंत्र इस प्रकार है-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शत्रु भस्मं कुरू कुरू ॐ ह्रूं फट् स्वाहा।

हवन के लिए सामग्री - पीली सरसों, सरसों का तेल, नीम के पत्ते तथा गुग्गुल ।

निर्देश :- इस मंत्र का प्रयोग अपने शत्रुओं को अपने पक्ष में करने के लिए, दुरात्मा को सामान्य रूप से दंड देने के लिए, अथवा उसे स्थान छोडने के लिए ही करना चाहिए । ऐसे मंत्रों का प्रयोग मारण हेतु करने से स्वयं का ही नाश होता हैं। यदि कभी मन में मारण की भावना भी आये तो सर्वप्रथम अपने विशिष्ट शत्रुओं का मारण करना चाहिए, जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि के रूप में आपके अपने भीतर बैठें है। जिस दिन ये आपके भीतर के शत्रु समाप्त हो जायेगें, उस दिन के बाद बाह्य जगत में आपका कोई शत्रु होगा ही नहीं।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)